1 सूर्योदय

इस कविता में सूर्योदय के दृश्य का अत्यंत मनोरम चित्रण हुआ है। इसमें प्रकृति की छटा का सजीव अंकन है। सूर्योदय के समय आसमान में लालिमा छा जाती है। पक्षी चहकने लगते हैं। डालियों पर फूल खिल जाते हैं। ओस-कण मोतियों के समान प्रतीत होते हैं। पल-पल परिवर्तित प्रकृति-चित्रण जीवंत हो उठता है।

उदय हुआ सूरज पूरब में,
आसमान में छाई लाली।
रही न रात, न रहा अँधेरा,
रही न चंदा की उजियाली।

डाल-डाल पर बैठे पक्षी,
चह-चह, चहक रहे हैं।
खिले फूल, मुसकाईं कलियाँ,
सारे उपवन महक रहे हैं।

हवा बह रही, धीमी-धीमी,
शीतल, मंद और सुखदाई।
जाग गए हैं खेत-बाग-वन,
पेड़ ले रहे हैं अँगड़ाई।

कण-कण पर बिखरे हैं मोती,
कण-कण बिखरी हैं मणियाँ।

Scanned with CamScanner

कितनी मनहर, कितनी सुंदर,
सुखद सुहानी ये घड़ियाँ।

-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शिक्षण-संकेत :

कविता का कक्षा में सस्वर वाचन करवाएँ। पहले शिक्षक स्वयं आदर्श वाचन करें। कविता को आरोह-अवरोह के साथ पढ़ें। बच्चों को कविता के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति कराएँ। कविता का मुख्य ध्येय रसानुभूति है। बच्चों को कविता कंठस्थ करने को कहें।

Scanned with CamScanner